आर्थिक पर्यावरण एवं भारत

श्रीमती एम.वी.चौधरी

सहायक प्राध्यापिका

श्रीमती एच.आर.पटेल कला महिला महाविद्यालय,

शिरपुर जि.धूले ४२४४०४(महाराष्ट्र)

आर्थिक पर्यावरण-मानव एक सामाजिक प्राणी है । आवश्यकता उसकी अनंत है । आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अनेक क्रियाए करनी पड़ती है । आर्थिक क्रियाओ पर वातावरण का प्रभाव पड़ता है । मनुष्य वातावरण की उपज है । आज मनुष्य वातावरण को पक्ष में करने के लिए प्रयास करते है । उसके बदले आर्थिक पर्यावरण की धरणा महत्वपूर्ण हो गई है ।

पर्यावरण का शाब्दिक अर्थ है हमारे चारो ओर छाया आवरण परि+आवरण=पर्यावरण. जीवन और पर्यावरण मै अटूट समबंध है । प्रकृति में जल, वायु, भूमि, पेड़, पौधे, जीव, जंतु आदि में एक संतुलन कायम रहना ही प्राणी के अस्तित्व का आधर है ।

संक्षेप में आर्थिक पर्यावरण से अभिप्राय मानव के निकटवर्ती परिस्थितियो से है जो सामाजिक, सांस्कृतिक, प्राकृतिक, राजनीतिक, आंतरराष्ट्रीय दशाए, प्रोद्योगिक एवं तकनीकी दशाओ के रूप में व्यक्तिकी आर्थिक क्रियाओ को प्रभावित करती है ।

आर्थिक पर्यावरण की विशेषताए **(Characteristics of Environment)**

गत्यात्मक **(Dynamic)**: आर्थिक पर्यावरण सदैव स्थिर नहीं रहता है । आर्थिक पर्यावरण के घटक देश, कल एवं परिस्थितियो के अनुसार बदलते रहते है । इसलिए आर्थिक पर्यावरण परिवर्तनशील होता है । आर्थिक पर्यावरण केवल राष्ट्र की आंतरिक परिस्थितियो ओर आंतरराष्ट्रीय परिस्थितियो का प्रभाव पड़ता है । परिणाम स्वरूप अर्थव्यवस्था व्यापार चक्रसे प्रभावित होती है ।

विभिन्न घटक **(Various Elements)**: आर्थिक पर्यावरण में प्राकृतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक जनसंख्या प्रोद्योगिक एवं तकनीकी, आर्थिक निति, वैधानिक दशा, राजनीतिक आंतरराष्ट्रीय दशा आदि घटक है । इनका परस्पर संबंध होता है । इनमे मानवकृत घटकों पर नियंत्रण संभव है, किन्तु प्राकृतिक घटकों पर आजतक नियंत्रण संभव नहीं है ।

आर्थिक क्रियाए **(Economic Activities)**: आर्थिक पर्यावरणमें उद्योग, कृषि, व्यापार, बैंक, बीमा, संचार, सार्वजनिक वित आदि आर्थिक क्रियाए सम्मिलित है ।

आधुनिक संरचना **(Modern Infrastructure)**: आधुनिक संरचना मै उर्जा, परिवहन संचार, पानी, बेंक, बीमा आदि को सम्मिलित किया है । आधुनिक संरचना का आर्थिक पर्यावरण पर प्रभाव पड़ता है । जिस देशोमे आधुनिक संरचना उपलब्ध है । वहा आर्थिक विकास की गति तीव्र है ।

पर्यावरणीय प्रभाव **(Environmental Effect)**: पर्यावरण जटिल एवं व्यापक है । आर्थिक पर्यावरण भी पर्यावरण का महत्वपूर्ण भाग है । पुरानी विचारधारा, रूढ़िवादिता विकास में अवरोध उत्पन्न करती रहती है ।

आर्थिक प्रणाली **(Economic System)**: आर्थिक प्रणाली में पूंजीवाद, समाजवाद, साम्यवाद आदि को सम्मिलित किया जाता है । आर्थिक प्रणालीका आर्थिक पर्यावरण पर व्यापक परिणाम पड़ता है । चीन में साम्यवादी आर्थिक प्रणाली के कारण निजी क्षेत्र को बढ़ावा मिला, भारत में मिश्रित अर्थव्यवस्था के कारण सार्वजनिक क्षेत्र तथा निजी क्षेत्र को गति मिली, आर्थिक सुधारो को लागु करने के बाद भारत में निजी क्षेत्र तुलनात्मक रूप से अधिक विकसित हुआ ।

सरकार की भूमिका **(Role of Govt.)**: आर्थिक पर्यवाराण में सरकार की महत्वपूर्ण भूमिका है । आर्थिक पर्यावरण पर सरकार का मार्गदर्शन और नियंत्रण है, नियोजित अर्थव्यवस्था में संसाधनों पर राज्य का अधिकार होता, क्योकि पूंजीवादी में राजकीय हस्तक्षेप कम होता है ।

पूंजी **(Capital)**: आर्थिक पर्यावरण में पूंजी महत्वपूर्ण होती है । पूंजी से प्राकृतिक-संसाधनों का तथा मानवीय संसाधनों का पूर्ण उपयोग संभव है । पूंजी की उपलब्धता से आर्थिक विकास की दिशा निर्धारित होती है ।

आर्थिक पर्यावरण को प्रभावित करनेवाले तत्व **(Factors Affecting Economic Environment)**: आर्थिक विकास का आर्थिक पर्यावरण पर प्रभाव पड़ता है । समूची अर्थव्यवस्था में विभिन्न तत्वों का प्रभाव में गरीबी, बेरोजगारी, आर्थिक विषमता निपटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है । इसके जाती है । आर्थिक पर्यावरण से आर्थिक विकास की गति धीमी हो जाती है । आर्थिक पर्यावरण को बहोत सरे घटक प्रभावित करते है । उनका उल्लेख हम आगे कर सकते है ।

प्राकृतिक संसाधन **(Natural Resources)**: भारत प्राकृतिक संसाधनों की द्रष्टि से दुनिया का एक संपन्न देश है । भारत की भौगोलिक स्थिति अनुकूल है । क्षेत्रफल की द्रष्टि से भारत का विश्व में सातवा स्थान है । भारत खनिजो का अजायब घर है । यहाँ बहुत सारे खनिज बड़ी मात्र में दिखाई देते है । कुछ खनिजो के उत्पादन में भारत का एकाधिकार है । आर्थिक ओर औद्योगिक

विकास के लिए खनिज भारत में पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है । जपान ने खनिजो का आयत करके औद्योगिकीकरण को तीव्र गति दी । अमरीका, रूस, खाड़ी के देश, पश्चिम के विक्सित देश प्राकृतिक संसाधनो के बल पर विकास की ओर अग्रसर हुए । अंतः प्राकृतिक संसाधनों का आर्थिक पर्यावरण का अत्याधिक प्रभाव है ।

मानव संसाधन **(Human Resources)**: भारत में मानव संसाधन आर्थिक विकास में अवरोध सिद्ध हुआ है । जनाधिक्य के कारण भारत दुनिया के बड़े बाजार के रूप में उभरा है । श्रमशक्ति कम होने के कारण विदेशी निवेशको का आकर्षण बढ़ा है । जन संख्या बढ़ने से अनेक समस्याए तथा गरीबी, बेकारी, पिछड़ापन बढ़ गया है । आर्थिक प्रगति जनसंख्या रूपी बाढ़ में बह गया है । निराक्षारो की भरमार के कारण जनसंख्या में गुणात्मकता का अभाव है । जनसंख्या का अनुकूल स्तर आर्थिक में सहायक होता है । भारत की लोक संख्या आज १२४ करोड़ के आसपास है । लगभग ४८ प्रतिशत लोगो के निरक्षर रहेते तीव्र आर्थिक विकास मुश्किल काम है ।

आर्थिक निति **(Economic Policy)**: आर्थिक पर्यावरण आर्थिक नीतिओ से प्रभावित होता है । भारत में नियोजन १९४९ से १९९० तक प्रभावी रहा । विश्व के परिवर्तित आर्थिक परिदृश्य के साथ कदमताल करते १९९१ से आर्थिक उदारीकरण की निति आत्मसात की, आर्थिक उदारीकरण के दौर में अर्थव्यवस्था में अनेक संरचनात्मक बदलाव किए गए । परिणाम स्वरूप विकास में सरकार की भूमिका गौण ओर निजी क्षेत्र की भूमिका प्रमुख हो गई । नई आर्थिक निति आर्थिक पर्यावरण को प्रभावित कराती है ।

औद्योगीकरण **(Industrialization)**: औद्योगीकरण आर्थिक वातावरण सुर्जित करने का आधारभूत घटक है । भारत में पंचवर्षीय योजनाओ में उद्योगों पर सार्वजनिक परिव्यय वृद्धि के कारण औधयोगीकरण का वातावरण बन नियोजन काल में निजी क्षेत्र राजकीय संरक्षण के कारण आर्थिक उदारीकरण के दौर में भारत के औद्योगिक दरवाजे विदेशी निवेशको के लिए खोल देने के कारण निजी क्षेत्र प्रतिस्पर्धा में टिकने के लिए संघर्ष रत है । आर्थिक उदारीकरण के बाद औद्योगिक विकास में गति आई । औधयोगीक वृद्धि दर १९४६-९६ मे ६.६% और १९९७-९८ में १२.८% थी ।

शिक्षा **(Education)**: शैक्षणिक विकास आर्थिक पर्यावरण में सहायक होता है । भारत में आर्थिक पर्यावरण अच्छा नहीं होने का कारण शिक्षा का आभाव है । भारत में शिक्षा की कमी की वजह से अनेक समस्याए बढ़ी है । जनसंख्या विस्फोट के कारण शिक्षा का अभाव दिखाई नहीं देता है । पंचवार्षिक योजनाओ में सामजिक विकास के शिक्षा सबंधी महत्वपूर्ण पहलू पर अपेक्षित ध्यान दिया जाता तो आज दुनिया में सर्वाधिक भारतीय नहीं होते । निरक्षरो की भीड़ सर्वदूर दीखाई

देती है । जिसका आर्थिक विकास में योगदान नहीं है । भारत की प्रगति निरक्षर लोगो की बाढ़ में बह जाती है ।

सामाजिक और सांस्कृतिक दिशाए **(Social & Cultural Conditions)**: आर्थिक पर्यावरण में सामाजिक और सांस्कृतिक दिशाए महत्त्व पूर्ण होती है । भारत में आर्थिक पर्यावरण विकास के मार्ग में सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियो ने अड़चन पैदा की है । ग्रामीण परिवेश का बड़ा भाग निरक्षरता के कारण रूढ़िवादिताओ ओर अन्धविश्वासो में डूबा है । पढ़े लिखे लोगो की मानसिकताभी कमज्यादा ऐसी ही हो गई है । आम लोगो जाती प्रथा परमपराओ ओर समाजिक मूल्यों के कारण बदलाव मुश्किल से स्वीकार करते है । इस वजह से भारत आजभी विकसनशील देशो में तुलना की जाती है । और आर्थिक विकास की गति धीमी होगई है ।

प्रौद्योगिकी विकास **(Technological Development)**: आज आर्थिक पर्यावरण प्रौद्योगिकी पर निर्भर है । विक्सित देश शोध एवं अनुसंधान पर ज्यादा राशी खर्च करते है । इन देशो का उत्पादन नविन प्रौद्योगिकी से सुर्जित होता है । बहुराष्ट्रीय कंपनीओ विक्सित देशो की दें है । विकसनशील देश प्रौद्योगिकी के लिए बहुराष्ट्रीय कंपनीओ एवं विक्सित देशो पर निर्भर है । भारत में शोध एवं अनुसंधान पर बल देने के कारण प्रौद्योगिकी विकास हुआ है । किन्तु अभी विक्सित देशोकी तुलना में स्थिति कमजोर है, भारत में उच्चशिक्षा पर परिव्यय बढाने की आवश्यकता है ।

राजनीतिक दशाए **(Political Conditions)**: राजनितिक स्थाइत्व से आर्थिक पर्यावरण में तीव्र विकास के लिए अनुकूलन परिस्थितीय बनती है । देशी ओर विदेशी निवेशको का अर्थव्यवस्था में विश्वास बढ़ता है । इसके विपरीत राजनीतिक अस्थिरता से आर्थिक पर्यावरण में अनिश्चितता की स्थिति हो जाती है । भारत में आर्थिक उदारीकरण के दौर में राजनीतिक अस्थिरता चिंताप्रद है । राजनीतिक अस्थिरता के कारण १९९८-९९ में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में भारी कमी आई है । भारत में अच्छे आर्थिक पर्यावरण के लिए राजनीतिक स्थायित्व आवश्यक है । रूस, पाकिस्तान, बंगलादेश आदि देशो ने राजनीतिक अस्थिरता के कारण आर्थिक पर्यावरण बिगड़ा है ।

आंतरराष्ट्रिय परिस्थितियाँ **(International Conditions)**: आंतरराष्ट्रिय परिस्थितियो का आर्थिक पर्यवारण पर प्रभाव पड़ा है । भारत द्वारा मई १९९८ में पोकरण में परमाणु विस्फोट करने के बाद अमरीका ने भारत के खिलाफ आर्थिक प्रतिबंधो की घोषणा की । अंतराष्ट्रीय वितीय संस्थाओ तथा विश्व बेंक, ओर आई.एम्.एफ.एफ आदि ने आर्थिक सहायता स्थगित की । वर्ष १९९८ की विश्व व्यापी मंदी का भारत की अर्थव्यवस्था पर प्रभाव पड़ा । वितवर्ष १९९७-९८ और १९९८-९९ में भारत की अर्थव्यवस्था दक्षिण पूर्व एशियाई संकट सेभी प्रभावित हुई । दक्षिण एशियाई देशो की मुद्रा का भरी अवमूल्यन होने के कारण भारत के निर्यातों पर विपरीत प्रभाव पड़ा । भारत

पर सी.टी.बी.टी पर हस्ताक्षर करनेका भारी दबाव है । इन सब घटनाओ का भारत के आर्थिक पर्यावरण पर प्रभाव पड़ा है । भारत के आर्थिक पर्यावरण पर अंतरराषट्रीय परिस्थितियो विशेषकरण पडोशी राष्ट्रों का रुख का अनुकूलन प्रभाव नहीं पड़ा ।

पर्यावरण संरक्षण **(Environment Protection)**: आज विश्व में पर्यावरण प्रदुषण की विकत समस्या है । पृथ्वी पर बढ़ते प्रदुषण के कारण "ओजोन" तक प्रभावित होगई है । भारत में राजकीय प्रयासों और जनता की जागरूकता के बावजूत पर्यावरण प्रदुषण की समस्या बढती जा रही है । गरीबी के कारण वनों की अंधाधुंध कटाई हो रही है । बहुसंख्यक जनसंख्या प्रदूषित जल पिने के लिए अभिशप्त है । शहरो में कोलाहलपूर्ण वतावरने है । धव्नि ओर वायु प्रदुषण ने गंभीर रूप धारण कर लिया है । सरकार और देशवासियो को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक रहेने की आवश्यकता है ।

आर्थिक प्रणाली **(Economic System)**: आर्थिक पर्यावरण राष्ट्रीय विशेष द्वारा आत्मसात की जानेवाली आर्थिक प्रणाली पर निर्भर करती है । वर्तमान में विश्व के देशो में पूंजीवादी, साम्यवादी, समाजवादी तथा मिश्रित अर्थव्यवस्था आर्थिक प्रणालिया द्रष्टिगोचर है । आर्थिक प्रणालिया लगभग अलग अलग तरीके से आर्थिक पर्यावरण को प्रभावित करती है ।

भारतीय आर्थिक पर्यावरण **(Indian Economic Environment)**: विश्व की अर्थव्यवस्था में भारत का गौरपूर्ण स्थान है । भारत सांस्कृतिक विरासत और विविधाताओ के कारण दुनिया में प्रसिध्द है । भारत में स्वतान्तरोतर ७० वर्षो में बहु आयामी आर्थिक और सामाजिक प्रगति की है । वर्तमान में भारत खाद्यान्न के क्षेत्र में आत्मनिर्भर है । तथा विश्व के औद्योगिक देशो में महत्वपूर्ण स्थान है । जनहित में प्रकृति पर विजय पाने के हेतु अंतरीक्ष में जानेवाले देशो में भारत का छठा स्थान है । वीसवी शताब्दी के अस्सी ओर नब्बे दशक में विश्व आर्थिक संक्रमण के दौर से गुजरा । भारत ने विश्व के परिवर्तित आर्थिक परिद्रश्य के साथ कदमताल करने के लिए । वर्ष १९९१-९२ में आर्थिक उदारीकरण की शरुआत की । उदारीकरण के प्रारंभिक ५ वर्ष भारत की अर्थव्यवस्था में संरचना सबंधी मुलभुत परिवर्तन किए गए । वर्ष १९९६-९७ से १९९९-२००० तक भारत ने राजनितिक अस्थिरता का दौर रहा है । बार बार केंद्र में सरकार बदली । केंद्र में सत्तारूढ़ सभी सरकारों ने न्यूनाधिक आर्थिक सुधारो को गति दी ।

उपयुक्त विवरण के आधार पर यहाँ कहा जा सकता है की आर्थिक पर्यावरण पर अनेक घटकों का प्रभाव पड़ता है । आज विश्व के देश पर्यावरण को प्रभावित करनेवाले घर को अनुकूल बनाने का प्रयास कर रहे है । ताकि विकास की तेज गति प्राप्त कर सके । भारत में आर्थिक पर्यावरण को प्रभावित करने वाले घटकों की स्थिति प्रतिकुल होने के कारण आर्थिक विकास की

गति धीमी है । मानव संसाधन, बढ़ता विदेशी ऋण, प्रतिकूल व्यापार शेष, आधारभूत संरचना का आभाव आदि घटक विकास के मार्ग में बाधक बने है ।

संदर्भ सूची:

१.भारत में आर्थिक पर्यावरण, लेखक ओ.पी.शर्मा, रबसा पब्लिशर्स एस.एम.एस. हायवे जयपुर (भारत)

२.विकास का अर्थशास्त्र एवं आयोजन, लेखक डॉ.एम.एल.झिंगन वृंदा पब्लिकेशन्स प्रा.लि.

३.वेबसाइट.